देवलाली में मुमुक्षु सम्मेलन

प्रशिक्षण-शिविर के ठीक पहले 5 से 7 मई 2007 तक मुमुक्षु विद्वानों और मुमुक्षु मंडल के प्रतिनिधियों का एक स्नेह सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। उक्त संदर्भ में हमारे पास देवलाली ट्रस्ट की ओर से गुजराती में एक परिपत्र जैनपथप्रदर्शक और वीतराग-विज्ञान में प्रकाशनार्थ आया है; जिसका भावानुवाद इसप्रकार है ह्न

इस सन्दर्भ में हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि यह सम्मेलन पूर्णत: स्नेह सम्मेलन ही है। इसमें न तो कोई नई संगठनात्मक संस्था बनाना है और न किसी खास तात्त्विक, सामाजिक और व्यक्तिगत व्यवहार की चर्चा करनी है। उद्देश्य मात्र इतना ही है कि पू. गुरुदेवश्री के देहावसान के बाद अपने समाज में जो तत्त्वसंबंधी उदासीनता दिखाई देती है; उसके बारे में गंभीर विचार-विमर्श करना है। अपने बालकों व युवकों में संस्कार डालने के लिए कुछ ऐसा करना है कि जिससे बालकों व युवकों में तत्त्व के प्रति रुचि जागृत हो; क्योंकि महान भाग्य से इसकाल में हमें जो उत्तम तत्त्व प्राप्त हुआ है, वह यदि भावी पीढ़ी में नहीं पहुँचेगा तो ..।

1976 में पूज्य गुरुदेवश्री की उपस्थिति में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने यह चेतावनी दी थी कि गुजराती भाई-बहिनों में धर्म के प्रति जो रस दिखाई देता है, वह मात्र गुरुदेवश्री के प्रभाव के कारण ही है, व्यक्तिविशेष के प्रति अहोभाव के कारण ही है। यदि तत्त्व के कारण बहुमान नहीं आयेगा तो व्यक्ति की गैरहाजिरी होते ही लोप हो जायेगा ह्न ऐसा भय है। हुआ भी लगभग ऐसा ही है, इसलिए इस सन्दर्भ में गंभीर विचार करने का समय आ गया है।

सामान्य मतभेदों को भूलकर समाज तत्त्वरसिक किसप्रकार हो, बालक और युवकों में तत्त्वरुचि कैसे उत्पन्न हो ह्न इन बातों पर विचार करना है; किसी प्रकार की वाद-विवादवाली बात की चर्चा नहीं करना है। ध्यान रहे, वातावरण में कलुषता उत्पन्न हो ह्न ऐसी कोई चर्चा किसी को नहीं करने दी जावेगी।

सम्पूर्ण भारतवर्ष के सभी प्रमुख मुमुक्षुओं को आमंत्रण है। हम आशा रखते हैं कि आप सब हमारे अतिथि बनेंगे। पूज्य गुरुदेवश्री की उपस्थिति में हम सब जिस वात्सल्यभाव से मिलते थे; उसीप्रकार के वात्सल्यभाव का अनुभव आपको इस सम्मेलन में होगा। आने की पूर्व सूचना अवश्य देवे।

हम जब श्री पाटनीजी और डॉ. भारिल्लजी के साथ सन् 2000 में ससंघ सौराष्ट्र के जिनमंदिरों के दर्शन करने गये थे; जब जो वात्सल्यभाव सोनगढ़ ट्रस्ट ने बताया था, वैसा ही हमसे प्राप्त होगा ह्न इस विश्वास के साथ **ह्न समस्त ट्रस्टीगण**

पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली (महा.)

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 25 284 अंक : 8

प्रवचनसार पद्यानुवाद
पंचरत्न अधिकार

अयथार्थग्राही तत्त्व के हों भले ही जिनमार्ग में।
कर्मफल से आभरित भवभ्रमे भावीकाल में।।२७१।।
यथार्थग्राही तत्त्व के अर रहित अयथाचार से।
प्रशान्तात्मा श्रमण वे ना भवभ्रमे चिरकाल तक।।२७२।।
यथार्थ जाने अर्थ दो विध परिग्रह को छोड़कर।
ना विषय में आसक्त वे ही श्रमण शुद्ध कहे गये।।२७३।।
है ज्ञान-दर्शन शुद्धता निज शुद्धता श्रामण्य है।
हो शुद्ध को निर्वाण शत-शत बार उनको नमन है।।२७४।।
जो श्रमण-श्रावक जानते जिनवचन के इस सार को।
वे प्राप्त करते शीघ्र ही निज आत्मा के सार को।।२७५।।

प्रवचनसार कलश पद्यानुवाद
(दोहा)

स्वानुभूति से जो प्रगट सर्वव्यापि चिद्रूप।
ज्ञान और आनन्दमय नमो परात्मस्वरूप।।१।।
महामोहतम को करे क्रीड़ा में निस्तेज।
सब जग आलोकित करे अनेकान्तमय तेज।।२।।
प्यासे परमानन्द के भव्यों के हित हेतु।
वृत्ति प्रवचनसार की करता हूँ भवसेतु।।३।।

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

इष्टोपदेश प्रवचन

बोलते हुये भी नहीं बोलता

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दिस्वामी के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 41 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

ब्रुवन्नपि हि न ब्रुते, गच्छन्नपि न गच्छति।
स्थिरीकृतात्मतत्त्वस्तु, पश्यन्नपि न पश्यति ।।41।।

जिसने आत्मतत्त्व के विषय में स्थिरता प्राप्त की है, वह (पुरुष) बोलते हुये भी नहीं बोलता, चलते हुये भी नहीं चलता और देखते हुये भी नहीं देखता ।

(गतांक से आगे...)

जिस धर्मी पुरुष ने आत्मस्वरूप के विषय में स्थिरता प्राप्त कर ज्ञायक चिदानन्द की दृष्टि, ज्ञान व अनुभव किया है ह्न ऐसा धर्मात्मा बोलते हुए भी नहीं बोलता, चलते हुये भी नहीं चलता और देखते हुये भी नहीं देखता; क्योंकि वह मन-वचन-क्रिया का कर्त्ता नहीं है, मात्र ज्ञाता-दृष्टा है।

सम्यग्दृष्टि के स्वरूप की प्रशंसा करते हुये पण्डित बनारसीदासजी समयसार नाटक, निर्जरा अधिकार के 29 वें छन्द में लिखते हैं ह्न

जिन्हके हिय मैं सत्य सूरज उदोत भयो,
फैली मति किरन मिथ्यात-तम नष्ट है।
जिन्हकी सुदिष्टी मैं न परचै विषमता सौं,
समता सौं प्रीति ममता सौं लष्ट-पुष्ट है।।
जिन्हके कटाक्ष मैं सहज मोखपंथ सधै,
मन कौ निरोध जाके तन कौ न कष्ट है।
तिन्हके करम की कलोलैं यह है समाधि,
डोलै यह जोगासन बोलै यह मष्ट है।।

जिनके हृदय में सम्यक्त्वरूपी सत्य सूर्य का उदय हुआ है, उनके सम्यग्ज्ञानरूपी किरणों से मिथ्यात्वरूपी अन्धकार का नाश हो गया है। उन जीवों को मोक्षपंथ अत्यन्त सुगम है। मन-वचन-काय का निरोध होने से स्वभाव-शांतिरूप समाधि

उन्हें वर्त रही है। चलने-फिरनेरूप क्रिया करते हुये भी वे योग में लीन हैं; क्योंकि चलने-फिरने रूप क्रिया तो जड़ में होती है। मैं उसका कर्त्ता-हर्त्ता हूँ ह्न ऐसा ज्ञानी नहीं मानता। मैं तो निज ज्ञानस्वरूप में ही विद्यमान हूँ ह्न यह भावना उसके अन्तर में सदैव विद्यमान रहती है।

हे भाई ! यह वीतराग का मार्ग है। जिसे गणधरों ने पसन्द किया हैं। इन्द्रों ने स्वीकार किया और मुनियों ने अपने अनुभव में लिया हैं तथा सम्यग्दृष्टियों ने अपनी निज आत्मा में धारण किया है।

सम्यग्दृष्टि जीव बोलते हुये भी नहीं बोलता है; क्योंकि उसकी दृष्टि में जब राग के प्रति अपनापन ही नहीं है तो बाह्य वाणी या शरीर की क्रियारूप व्यापार से अपनापन कैसे होगा ? शुभराग, धन, गृहस्थी इत्यादि में ज्ञानी कभी मग्न नहीं होते। शुभराग से धर्मी का स्थान अत्यन्त भिन्न है। वह तो अन्तर में वैराग्यरस से ओत-प्रोत है।

धर्मी गृहस्थाश्रम या वन-जंगल में रहे; वह समस्त पदार्थों से भिन्न ही रहता है। परद्रव्य के साथ मेरा कोई संबंध नहीं है, अशुभराग से मैं सर्वथा भिन्न हूँ तथा जिस भाव से तीर्थंकर नामकर्म बंधे ह्न वह शुभराग भी मुझसे भिन्न है ह्न ऐसा विचार करते हुये ज्ञानी सदैव शुद्धस्वरूप को अनुभवते हैं। स्वभाव और शुभराग दोनों का स्वरूप और फल सदैव भिन्न ही हैं ह्न ऐसा श्रद्धान-ज्ञान और अनुभव धर्मी जीव को निरन्तर वर्तता है।

इससे विपरीत अज्ञानी जीव ने शुभराग और शरीर की क्रिया से अपना लाभ मानकर स्वयं को बड़ा नुकसान पहुँचाया है। उसने अपनी श्रद्धा में निजात्मा को नास्तिरूप तथा राग व शरीर की क्रिया को अस्तिरूप स्वीकार किया है; अत: करुणाधारी संत कहते हैं कि हे भाई ! तूने अपने अस्तित्व को क्यों भूला दिया ? एकबार अपने अस्तिरूप का विचार तो कर !

वनवासी दिगम्बर संत आचार्य पूज्यपादस्वामी धर्मी जीव की महिमा वर्णन करते हुये कहते हैं कि जिसे राग और पर से भिन्न निज आत्मा में स्थिरता हुई है ह्न वह ज्ञानी जीव बोलते हुये भी नहीं बोलता, चलते हुये भी नहीं चलता तथा देखते हुये पर भी नहीं देखता । इसप्रकार सम्पूर्ण जगत से ज्ञानी की परिणति सर्वथा भिन्न ही है।

जिसे अपनी आत्मा का हित करना है, उसे निजात्मा को श्रद्धान-ज्ञान का विषय बनाकर अन्तर में **मैं शुद्ध ज्ञानानन्द का पिण्ड हूँ** ह्न ऐसी दृढ़ प्रतीति करनी चाहिये। भगवान आत्मा ही एक समय में चैतन्यबिम्ब ज्ञायकप्रभु है; अत: उसकी दृढ़ प्रतीति प्रत्येक जीव को करना ही चाहिये।

जिसे धर्म अर्थात् सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र प्रगट करना है, उसे निज आत्मा को ही जानना होगा; क्योंकि आत्मा को विषय बनाने के पश्चात् परद्रव्य मेरे हैं और मैं उनमें कुछ फेरफार कर सकता हूँ ह्न ऐसी मिथ्याबुद्धि नहीं रहती।

जिसे अपने हित का कार्य करना है, उसे अपने स्वभाव की अभिमुखता नहीं छोड़ना चाहिये। पूर्व संस्कार अथवा कमजोरी के कारण कुछ रागादि उत्पन्न हो भी जाये तो उन्हें अच्छा न मानकर निज आत्मस्वभाव को ही हितरूप जानना चाहिये।

कोई पुरुष धर्मी को उपदेश देने के लिये कहे और कमजोरीवश धर्मी उपदेशादि देवे, फिर भी उसकी स्वभावोन्मुखता कभी छूटती नहीं; क्योंकि उपदेशरूप शब्द अथवा राग की रुचि उसे नहीं है।

जिसप्रकार कोई भी पुरुष दरिद्रता की चाह नहीं करता, किन्तु दरिद्रता आ जाती है; उसीप्रकार धर्मी को भी राग की इच्छा नहीं है, किन्तु कमजोरीवश उसे राग आ जाता है; तथापि वह राग का स्वामी नहीं होता। उसे राग की चाह नहीं है। इसप्रकार वचनरूप व्यवहार होने पर भी धर्मी उससे भिन्न रहता है। यहाँ तक कि बोलने के विकल्प संबंधी राग भी धर्मी को नहीं है। उसका झुकाव तो एकमात्र निज आत्मा की ओर ही है; इसलिये वह बोलते हुये भी अबोल है।

जैसे कोई पुरुष वन-जंगल में गया और उसे वहाँ पाँच करोड़ का घड़ा प्राप्त हो तो उसे ढँककर वापिस गाँव की ओर आता है, धन ढका होने पर भी उसका लक्ष्य घड़े की ओर ही लगा रहता है। उसीप्रकार धर्मी जीव को भी अनंतगुणों का निधान अपना आत्मा प्राप्त हुआ है; किन्तु कमजोरीवश कदाचित् वह बाह्य विकल्पों में भी आ जाये, फिर भी उसका लक्ष्य निजस्वरूप की ओर ही रहता है।

' मैं अनन्तदर्शन-ज्ञान-स्वच्छता-प्रभुता आदि अनन्तगुणों का स्वामी हूँ ' ह्न ऐसा श्रद्धान-ज्ञान उसे वर्तता है; इसप्रकार अपने आत्मस्वरूप में ही एकाग्र होकर वह अपने आत्मनिधान को प्राप्त करने के लिये अग्रसर रहता है। **(क्रमश:)**

आत्मा किसका कर्त्ता-भोक्ता है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के 30 वें कलश पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्म-रसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

श्लोक मूलत: इसप्रकार है ह्न

अपि च सकलरागद्वेषमोहात्मको य:
परमगुरुपदाब्जद्वन्द्वसेवाप्रसादात्।
सहजसमयसारं निर्विकल्प हि बुद्ध्वा
स भवति परमश्रीकामिनीकान्तकान्त: ।।30।।

सकलमोह-राग-द्वेषवाला जो कोई पुरुष, परमगुरु के चरणकमल की सेवा के प्रसाद से निर्विकल्प सहज समयसार को जानता है; वह पुरुष परमश्रीरूपी सुन्दरी का प्रिय कान्त होता है।

अठारहवीं गाथा में ऐसा कहा था कि आत्मा अपने रागादि परिणाम का अशुद्ध निश्चयनय से कर्त्ता है; कर्म उसे वास्तव में विकार नहीं कराते । पर के कारण विकार मानना तो तीव्र मोह है ही । कर्म के उदय प्रमाण मुझे विकार करना पड़ता है, यह मान्यता भी तीव्र मोह है।

व्यवहार से जो देहादि के कर्त्तापन की बात की थी, वह सब यहाँ निकाल दी। यहाँ तो आत्मा के अपने परिणमन में होनेवाले राग-द्वेष-मोह की बात है तथा उस राग-द्वेष-मोह का कर्त्तापन किसप्रकार टले ह्न यह बात यहाँ बतलाते हैं।

चैतन्य को चूककर किसी भी पराश्रय भाव से लाभ मानना राग-द्वेष-मोह है। जिसको निश्चय शुद्धचैतन्यस्वभाव का भान नहीं और अनादि से राग-द्वेष-मोह में ही अटका हुआ है ह्न ऐसा पुरुष भी परमगुरु के चरण-कमल की सेवा के प्रसाद से शुद्ध आत्मा को जानता है।

इसके लिये प्रथम तो सच्चे गुरु की देशना मिले पश्चात् उस परमगुरु ने जैसा कहा; वैसा ही स्वयं श्रद्धान-ज्ञान करे तो श्रीगुरु के चरण की सेवा करना कहलाये। चैतन्य भगवान पुण्य-पापरहित निर्विकल्प है ह्न ऐसा श्रीगुरु ने कहा और शिष्य ने जाना।

अनादि से पर्याय में राग-द्वेष-मोह हैं यह तो पहले ही बतलाया और अशुद्ध-निश्चय से उनका कर्त्ता कहा ह्न यह कैसे निवारण किया जाये इसकी यह बात है।

अनादि से निर्विकल्प सहज समयसार को नहीं जाना और सविकल्प व्यवहार द्वारा रागादि से आत्मा का लाभ मानता रहा; इसीलिए अबतक रागी-द्वेषी-मोही रहा ह्न इसका ज्ञान कराने के पश्चात्; अब श्रीगुरु के उपदेश से शुद्धात्मा को जानने पर राग-द्वेष-मोह टल जाता ह्न इसका ज्ञान कराते हैं।

श्रीगुरु ने भी ऐसा उपदेश दिया कि तेरा आत्मा व्यवहार के विकल्प से रहित है, वह तो निर्विकल्प सहज समयसार है; उसकी श्रद्धा-ज्ञान करने से तेरा कल्याण होगा। इसप्रकार जिसने समझ लिया, समझो उस पर श्रीगुरु की कृपा हुई है ।

कर्म के कारण विकार होता है अथवा उदय प्रमाण विकार करना पड़ता है ह्न ऐसा मानने वाले का पुरुषार्थ क्षीण हो जाता है; क्योंकि उसकी दृष्टि तो उदय से जुड़ी रहती है अर्थात् अशुभ पलटकर गुरु की वाणी के श्रवण का शुभभाव करने का अवकाश भी नहीं होता। ऐसा जीव तीव्र मिथ्यात्व में पड़ा हुआ है।

श्रीगुरु से मिलकर चिदानन्द निर्विकल्प आत्मा की बात सुनी। सुनते समय तो शुभ विकल्प था; किन्तु समझानेवाले ने ऐसा समझाया कि यह विकल्प तेरा स्वरूप नहीं है; इसलिये तू सहजरूप का आश्रय कर ! ऐसा समझकर जिसने निर्विकल्प सहज समयसार का आश्रय किया; उसने श्रीगुरु के चरण की सेवा के प्रसाद से शुद्ध आत्मा को जाना।

गुरु कैसा हो और उसकी वाणी सुननेवाला कैसा हो ह्न यह बात इसमें बतलाई। बीच में विकल्प का आश्रय करना बतलावे अथवा राग से लाभ मनवाये तो वह गुरु नहीं है और उसकी वाणी भी यथार्थ नहीं है। इसप्रकार कुगुरु को छोड़कर सच्चे गुरु के पास सुनने आया है ह्न ऐसे शिष्य से श्रीगुरु ने क्या कहा ?

श्रीगुरु ने ऐसा कहा कि तेरा आत्मा निर्विकल्प सहजशुद्धतत्त्व है, तेरे तत्त्व को मुझसे या विकल्प से लाभ नहीं है। जैसा शिष्य समझा वैसा ही श्रीगुरु ने कहा। जैसे कोई कहे कि 'मैं शक्कर लाया' तो इसमें यह बात भी आ गई कि 'व्यापारी ने शक्कर प्रदान की' । उसीप्रकार श्रीगुरु की सेवा के प्रसाद से शिष्य ने निर्विकल्प

सहज शुद्ध आत्मा को समझा ह्न इसमें यह बात भी आ गयी कि श्रीगुरु ने भी उसे वही बात समझाई है। तेरा स्वरूप निर्विकल्प सहज समयसार है ह्न उसमें किसी विकल्प से, व्यवहार से, राग से लाभ नहीं होता। ऐसे शुद्धात्मा की बात सुनने के लिए जो श्रीगुरु के पास आया है; उसका राग मंद हुआ है, कुदेव की मान्यता छूटकर मिथ्यात्व भी मंद हो गया है।

श्रीगुरु कहते हैं कि इस शुभराग से भी लाभ नहीं है ह्न ऐसा हम तुझे बतलाते हैं। तेरे आत्मा को तेरे सहजशुद्धतत्त्व के आश्रय से ही लाभ होगा। जिसने राग से, व्यवहार से आत्मा को लाभ माना अथवा मनवाया उसने तो आत्मा को रागवाला ही स्वीकार किया और करवाया; अत: वह तो कुगुरु है। ऐसे कुगुरु की सेवा जिसने त्याग दी है और सच्चे गुरु के पास सुनने आया है, उसे सद्गुरु कहते हैं कि तेरा आत्मा निर्विकल्प चिदानन्दस्वरूप है, कुगुरुओं ने तुझे रागवाला/भिखारी मनवाया है, सो यथार्थ नहीं है। हम तो कहते हैं कि तू भिखारी नहीं; अपितु चक्रवर्ती है, तेरा स्वरूप सहज शुद्ध चिदानन्द है।

इसप्रकार श्रीगुरु के पास से अपना स्वभाव सुनकर, उसका स्वीकार करके जो स्वभाव-सन्मुख झुका, उसने निर्विकल्प समयसार को जान लिया ह्न यही श्रीगुरु की सेवा का प्रसाद है। जब स्वयं शुद्ध स्वभाव को जाने तब श्रीगुरु भी वैसा ही बतलाने वाले हैं – ऐसा समझना चाहिये।

अफीम की दुकान छोड़कर मिष्ठान्न की दुकान पर गया तो समझ लेना चाहिए कि उस मनुष्य को मिठाई खरीदना है। उसीप्रकार जो जीव राग से लाभ मनवानेवाले कुगुरु को छोड़कर शुद्ध आत्मा बतलानेवाले श्रीगुरु की वाणी सुनने आया है, वह जीव शुद्धात्मा को ही समझने आया है। अर्थात् इसमें यह बात भी आ जाती है कि उस जीव को देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा है।

श्रीगुरु के चरणों की सेवा के प्रसाद से तू अपने चिदानन्द तत्त्व का ही अवलम्बन ले, उसी से तुझे लाभ है। सुनने का भाव तो व्यवहार है; अत: उससे लाभ मिलने की बात छोड़कर अपने निर्विकल्प चिदानन्द स्वभाव से ही लाभ माने और उसी का अनुभव करे तब कहा जाये कि उसने श्रीगुरु का उपदेश सुना।

छहढाला प्रवचन

रे जीव ! सुन, यह तेरे दु:ख की कथा

दुर्लभ लहि ज्यों चिन्तामणि, त्यों पर्याय लही त्रसतणी।
लट-पिपील-अलि आदि शरीर, धर-धर मर्यो सही बहु पीर।।५।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे ...)

जैसे सागर के मध्य में फेंका हुआ रत्न फिर से मिलना बहुत कठिन है, वैसे ही आत्मा की दरकार न करके यह मनुष्यपना विषयों में ही गुमा दिया तो संसार-समुद्र में यह मनुष्यपना प्राप्त होना दुर्लभ है। जो एक प्रकार का पत्थर ही है, वह हीरा जगत को मूल्यवान दिखता है और उसकी प्राप्ति होने पर खुश होता है; परन्तु उत्तम हीरों के ढेर से भी जिसकी प्राप्ति नहीं हो सकती ह्न ऐसा यह मनुष्यभवरूप हीरा हमें प्राप्त हुआ है, उसकी महत्ता समझकर हे जीव तू आत्मा को क्यों नहीं साधता? मनुष्य होकर भी जब आत्मा को समझे, तब ही मनुष्य अवतार की सफलता है; किन्तु ऐसे अमूल्य मनुष्य जीवन को जो विषय-कषायों में व्यर्थ ही खो देता है, उसकी मूर्खता का क्या कहना ? वह तो मनुष्यभव पूरा करके नरकादि में चला जायेगा।

लट-चींटी-भ्रमर आदि विकलत्रय जीव महान दुःखी हैं। लट होने पर कौआ उसे खा जाये, चींटी होने पर पैर के नीचे कुचल जाये, भ्रमर होने पर कमल में बंद हो जाये। कदाचित् ऐसा संयोग न हो तो भी मोह की तीव्रता से वे जीव निरन्तर दुःखी ही दुःखी हैं। जैसे बहुत मार खाने से यह मनुष्य बेहोश हो जाता है, वैसे ही दुःख की अतिशय वेदना से इन जीवों की चेतना बेहोश हो गई है; वे अत्यन्त मूर्च्छित हो रहे हैं। द्वि-त्रि-चतुरिन्द्रिय जीव विकलेन्द्रिय हैं। एकेन्द्रिय से विकलेन्द्रिय होना भी दुर्लभ है; तथापि ऐसा कोई नियम नहीं है कि एकेन्द्रिय से विकलेन्द्रिय होकर बाद में ही पंचेन्द्रिय हो सके; कोई जीव बीच में विकलेन्द्रिय न होकर

एकेन्द्रिय से सीधा पंचेन्द्रिय भी हो जाता है ह्न जैसे भरत चक्रवर्ती के 923 पुत्र निगोद से निकलकर सीधे मनुष्य होकर उसी भव से मोक्ष गये।

यहाँ तो ऐसा कहना है कि एकेन्द्रिय से निकलकर मुश्किल से कदाचित् द्वि-त्रि या चतुरिन्द्रिय होवे तो उसमें भी मिथ्यात्वादि के कारण से जीव महान दुःखी ही है। दुःख से छूटने का उपाय मिथ्यात्वभाव छोड़ने का उद्यम करना ही है।

आनन्द का पुंज प्रभु आत्मा, स्वयं अपने को भूलकर देहबुद्धि से दुःखी हो रहा है। उसे मालूम ही नहीं कि मैं जीव हूँ और सुख का भण्डार मुझ में भरा है। अभी जब मनुष्य अवतार में उसकी पहचान करने का अवसर मिला है, तब बाहरी सुविधा में या मान-अपमान देखने में तू क्यों रुक गया ? अरे, तेरे दुःख को देखकर ज्ञानी को करुणा आती है; इसलिये उस दुःख को मेटने का उपाय तुझे दिखाते हैं।

आत्मा का स्वभाव चेतना है; परन्तु अपने चेतनभाव को भूलकर यह अज्ञानी जीव अज्ञान चेतनारूप अर्थात् राग-द्वेष को करनेरूप कर्मचेतनारूप तथा दुःख को भोगनेरूप कर्मफल चेतनारूप हुआ। एकेन्द्रियपने में तो दुःखवेदनरूप कर्मफलचेतना ही मुख्य थी; त्रस होकर भी राग-द्वेष करनेरूप कर्मचेतना में ही लीन रहकर दुःख को ही भोगता है। कर्म व कर्मफल उन दोनों से भिन्न ज्ञानचेतना का अनुभव जबतक न करे, तबतक जीव को सुख नहीं होता। ज्ञानचेतना स्वयं आनन्दरूप है। ज्ञानचेतना ही मोक्ष का कारण है। ज्ञान चेतना कहो या वीतराग-विज्ञान कहो ह्न दोनों एक ही हैं।

भाई ! अपनी ज्ञानचेतना को भूलकर शरीर के जड़ कलेवर में तू मोहित हो गया; इसकारण तुमने बहुत शरीर धारण किये व छोड़े ह्न ऐसे जन्म-मरण में बहुत पीड़ा तुमने सहन की। इससे आत्मा का अभाव तो नहीं हुआ; परन्तु देहबुद्धि के कारण जन्म-मरण के बहुत दुःख इस जीव ने सहन किये और बार-बार भावमरण से मरा हैं।

अरे, एक अँगुली के कुचल जाने पर मोही जीव कितना दुःखी होता है तो जिसने शरीर को ही सर्वस्व मान रखा है, उसे मृत्यु के समय शरीर की ममता से कैसा तीव्र दुःख होगा ? लम्बी लट हो और उस पर पत्थर गिरे, उसका आधा शरीर पत्थर के नीचे कुचल जाये, पत्थर से दबा हुआ शरीर निकालने के लिए जोर करने पर वह

टूट जाये और फिर तड़प-तड़प कर मरे ह्न ऐसा मरण अनन्तकाल से जीव कर रहा है। जीव ने देह से रहित अपने अस्तित्व को कभी पहचाना नहीं तो उसे सुख कैसे प्राप्त होगा ? देह में तो कुछ भी सुख नहीं है; देह की ममता में तो दुःख ही दुःख है। सुख आत्मा में ही भरा है और उसकी पहचान से ही सुख होता है।

एकेन्द्रिय पर्याय से छूटकर शुभपरिणाम से कदाचित् त्रसपर्याय प्राप्त हुई तो वहाँ भी जीव ने दुःख का ही अनुभव किया। कभी चींटी या मक्खी होकर गन्ने के रस का स्वाद लेने में ऐसा एकाकार हो गया कि गन्ने के रस के साथ वह भी उबलकर मर गया। कभी लकड़ी के बीच में कीड़ा हुआ और अग्निकुण्ड में उस लकड़ी के साथ वह भस्मीभूत हो गया। ऐसे अनेक दुःख, जो कि बाह्य में प्रगट दिखते हैं, उनकी थोड़ी-सी बात की। इसके उपरान्त अन्तर में वे बेचारे असंज्ञी प्राणी अनन्त दुःख का वेदन करते हैं। वे अपने दुःख की पुकार कहाँ जाकर करें ? कोई उन्हें मारे-काटे, तब किसके पास जाकर वे शिकायत करें कि 'ये लोग हमको मार डालते हैं।'

भाई ! कौन सुनेगा तेरी पुकार और कौन मेटेगा तेरा दुःख ? तेरी ही भूल से तू दुःखी हो रहा है और वीतराग-विज्ञान के द्वारा तू ही तेरे आत्मा को दुःख से छुड़ा सकता हैं। दूसरों ने तुझे दुःख नहीं दिया और दूसरा तुझे दुःख से छुड़ा भी नहीं सकता। मिथ्यात्व से जीव ही अपना शत्रु है और सम्यक्त्व से जीव स्वयं ही अपना मित्र है। जीव स्वयं अपने ही सम्यक् या मिथ्याभावों के अनुसार सुखी या दुःखी होता है, कोई दूसरा उसे सुखी-दुःखी नहीं करता।

जीव जबतक देह से भिन्न अपने चेतनस्वरूप की सम्भाल न करे, तबतक 'भूल आपको भरमत वादि' ह्न दुःखी होकर संसार में ही रुलता है। जैसे इतिहासकार प्राचीन बातें सुनाते हैं, वैसे यहाँ शास्त्रकार जीव को अनादिकाल के परिभ्रमण की कथा सुनाते हैं। हे जीव ! पूर्वकाल में तूने कैसे-कैसे दुःख भोगे, उनका कारण क्या है और अब उनसे छुटकारा कैसे हो ? यह बात सन्त तुझे बता रहे हैं। **(क्रमशः)**

यह मानुष पर्याय, सुकुल, सुनवो जिनवाणी।
इह विधि गये न मिले सुमणि ज्यों उदधि समानी।।

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : ज्ञानी के शुभराग को व्यवहार से अमृतकुम्भ कहा है, तो फिर अज्ञानी के शुभराग को भी अमृतकुम्भ कहने में क्या बाधा है ? ज्ञानी हो या अज्ञानी, शुभराग तो शुभराग ही है न?

उत्तर : ज्ञानी को शुद्धस्वभाव की दृष्टि-ज्ञान आदि हुए हैं, उसको द्रव्यप्रतिक्रमणादि हैं, वे सब अपराधरूपी दोषों को घटाने में समर्थ होने से अमृतकुम्भ समान हैं ह्न ऐसा व्यवहार से कहने में आता है; क्योंकि धर्मी को शुद्धस्वभाव की दृष्टि-ज्ञान आदि होने के कारण उसके प्रतिक्रमणादि शुभभाव से अशुभभाव घटता है; अत: उसके शुभराग को व्यवहार से अमृतकुम्भ कहा है। परन्तु जिसको प्रतिक्रमण से विलक्षण ह्न ऐसे अप्रतिक्रमणरूप शुद्धस्वभाव की श्रद्धा-ज्ञान नहीं हुए उसको व्यवहार प्रतिक्रमणादि विषकुम्भ ही हैं। जिसको शुद्धस्वभाव का श्रद्धान-ज्ञान नहीं हुआ, उसके द्रव्यप्रमिक्रमणादि दोष घटाने में बिल्कुल समर्थ नहीं हैं, इसलिए उसके लिए तो वे प्रतिक्रमणादि विषकुम्भ ही हैं। ज्ञानी के निश्चयदृष्टि होती है; क्योंकि निश्चय सहित व्यवहार अशुभ के दोष को घटाता है। किन्तु जिसके निश्चय नहीं है, उसके तो व्यवहार ही नहीं है। उसके तो मिथ्यात्व है और वह भी अशुभ है, इसलिए उसके दोष नहीं घटते। सम्यग्दृष्टि को निश्चय का बल है, इसलिए उसको मिथ्यात्व तो है ही नहीं और उसका व्यवहार शुभ है, उससे अंशरूप में अशुभ घटता है; अत: व्यवहार से उसे अमृतकुम्भ कहा है। वास्तव में तो सम्यग्दृष्टि का शुभराग भी विषरूप है, तथापि उसमें अमृतरूपभाव का आरोप करके शुभराग को व्यवहार से अमृतरूप कहा है। मिथ्यादृष्टि का शुभराग तो अकेला विषरूप ही होने से उसमें अमृतकुम्भ का आरोप भी नहीं किया जा सकता।

प्रश्न : ज्ञानी शुभराग को भला नहीं जानते तो अतिचार का प्रायश्चित क्यों लेते हैं ?

उत्तर : प्रतिक्रमण-प्रायश्चित आदि के शुभराग को भी विषकुंभ कहा है। विषय-वासना का अशुभराग तो जहर है ही, पर शुभराग भी जहर है। भगवान आत्मा अमृतकुंभ है। राग उससे विरुद्धस्वभावी होने से जहर ही है। समयसार में प्रतिक्रमण आदि को भी जहर कहा है।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

बीना (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 25 जनवरी से 31 जनवरी 2007 तक श्री नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव अनेक मांगलिक कार्यक्रमों पूर्वक सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस महोत्सव में **मुनि श्री 108 निर्वाण सागरजी** पावन सानिध्य प्राप्त हुआ। विद्वानों में देश-विदेश के ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा पर प्रासंगिक प्रवचनों के अतिरिक्त दादा विमलचंदजी झांझरी, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, डॉ. उत्तमचन्दजी, पण्डित अभयकुमारजी, ब्र. सुमतप्रकाशजी, पण्डित राजेन्द्रजी, पण्डित हेमचन्दजी 'हेम', पण्डित सुबोधजी सिवनी आदि के प्रवचनों का लाभ मिला। बालकक्षा पण्डित विरागजी शास्त्री ने ली।

सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में सह-प्रतिष्ठाचार्य पं. शान्तिकुमारजी पाटील, पं. मधुकरजी जलगाँव, पं. ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पं. सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पं. श्रेयांसजी शास्त्री अभाना, पं. प्रियंकजी शास्त्री रहली, पं. चेतनजी शास्त्री खड़ैरी, पं. सुनीलजी धवल भोपाल, पं. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, पं.श्रेणिकजी जबलपुर, पं. महेन्द्रजी, पं. कांतिकुमारजी इन्दौर, पं. बाबूलालजी बांझल गुना ने सम्पन्न कराई।

महोत्सव की शुरुआत 25 जनवरी को घटयात्रा जुलूस के बाद झण्डारोहण एवं पाण्डाल उद्घाटन से हुई। इस अवसर पर श्री नेमिनाथ पंचकल्याणक विधान का आयोजन हुआ। रात्रि में नन्दीश्वर विद्यापीठ खनियांधाना के विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृति कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

27 जनवरी को गर्भ कल्याणक के प्रसंग पर रात्रि में श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला बीना के बालकों द्वारा 'विराधना का फल' नाटक का मंचन किया गया।

28 जनवरी को जन्म कल्याणक के प्रसंग पर 7-8 हजार लोगों की उपस्थिति में श्री नेमिकुमार का जन्माभिषेक किया गया। तत्पश्चात् सौधर्मइन्द्र द्वारा ताण्डव नृत्य किया गया। रात्रि में नेमिकुमार को पालन-झूलन का कार्यक्रम हुआ, जिसमें लगभग 10 हजार लोगों ने पालना झुलाया।

29 जनवरी को दीक्षाकल्याणक के प्रसंग पर मुनिश्री 108 निर्वाणसागरजी महाराज एवं डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के विशेष प्रवचन का लाभ मिला। रात्रि में विदिशा से पधारे कलाकारों द्वारा सुकुमाल मुनि एवं सीताजी के जीवन पर आधारित नाटक का मंचन हुआ।

30 जनवरी को रात्रि में नगर विधायक श्रीमती सुशीला राकेश सिरोठिया की अध्यक्षता एवं बड़ामलहरा विधायक श्री कपूरचन्दजी घुवारा के मुख्यातिथ्य में आभार प्रदर्शन का कार्यक्रम आयोजित हुआ। तत्पश्चात् वीतराग-विज्ञान बालिका मण्डल जबेरा की बालिकाओं ने सती अनंतमती नाटक का सुन्दर मंचन किया। मोक्षकल्याणक के दिन गजरथ द्वारा पाण्डाल की 7 प्रदक्षिणा दी गई।

सम्पूर्ण कार्यक्रम में सकल जैनसमाज बीना का अभूतपूर्व सहयोग रहा। सभी ने सीमंधर संगीत-सरिता छिन्दवाड़ा के भक्तिगीतों का लाभ लिया। इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के 23 हजार 316 घण्टों के प्रवचन एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से प्रकाशित 1 लाख 2 हजार 311 रुपये का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा।

ह्न सुदीप जैन

पंचकल्याणक वार्षिकोत्सव सानन्द सम्पन्न

मंगलायतन-अलीगढ़ (उ.प्र.) : यहाँ श्री कानजीस्वामी के पुण्य प्रभावना योग में निर्मित तीर्थधाम मङ्गलायतन की स्थापना का चतुर्थ वार्षिक महामहोत्सव दिनांक 02 से 06 फरवरी 2007 तक अत्यन्त आनन्दोल्लासपूर्ण वातावरण में सानन्द सम्पन्न हुआ।

2 फरवरी को श्रीमती चिन्तामणी धर्मपत्नी स्व. सवाईलाल सिंघई परिवार, कन्नौज ने झण्डारोहण किया। शिविर का उद्घाटन नैरोबी मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष प्रफुल्ल डी. राजा परिवार ने किया।

शिविर में विद्वानों द्वारा प्रवचनसार परमागम के आधार पर ही चर्चा की गई। इस अवसर पर प्रतिदिन गुरुदेवश्री के चरणानुयोग चूलिका पर सी.डी. प्रवचनों का लाभ मेहमानों को प्राप्त हुआ।

देश-विदेश के ख्यातिप्राप्त लोकप्रिय विद्वान **डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल,** जयपुर द्वारा प्रवचनसार गाथा 79-80 पर विशेष मार्मिक प्रवचन के साथ-साथ भगवान आत्मा और आत्मानुभव के लिये कैसा पुरुषार्थ चाहिये - विषय पर हुये प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। पण्डित अभयकुमार शास्त्री देवलाली द्वारा प्रवचनसार के कलशों को आधार बनाकर व्याख्यान किये गये। इनके अतिरिक्त पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, बाल ब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी सोनगढ़, डॉ. राकेशजी जैन शास्त्री, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन एवं पण्डित संजयजी जैन शास्त्री मंगलायतन द्वारा भी प्रवचनसार ग्रन्थ के विविध विषयों पर व्याख्यान का लाभ प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के प्रवचन **'कार्तिकेयानुप्रेक्षा प्रवचन भाग-1'**, डॉ. भारिल्ल के छहढाला पर हुए प्रवचनों की संकलित पुस्तिका **'छहढाला का सार'**, जैन सिद्धान्त प्रवेशिका, अकाल की रेखाएँ (कामिक्स) एवं प्रवचन सुधा भाग-8 का विमोचन किया गया।

5 फरवरी 07 को प्रात:काल उत्तरप्रदेश के माननीय **मुख्यमंत्री मुलायमसिंह यादव** ने **धन्य मुनिदशा** प्रकल्प का उद्घाटन कर समस्त साधर्मीजनों को इसके दर्शनों का सौभाग्य प्रदान किया। यह **धन्य मुनिदशा** प्रकल्प मुनि भगवन्तों के वैराग्य एवं आनंदमय जीवन की अद्भुत झलक है, जिसमें मुनिराजों के जीवन परिचय के साथ-साथ उन जैसी दशा प्राप्त करने हेतु प्रेरणात्मक चित्रण है।

जैनसमाज के प्रमुख विशिष्ट प्रतिनिधियों ने मुख्यमंत्री का माल्यार्पण कर, साफा पहनाकर, शॉल ओढ़ाकर हार्दिक स्वागत किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के साथ डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, डॉ. अच्युतानन्द मिश्र, पद्मविभूषण डॉ. गोपालदास 'नीरज' इत्यादि मंचासीन थे।

उद्घाटन से पूर्व श्री पवन जैन ने समागत अतिथियों एवं उपस्थित जनता को तीर्थधाम मंगलायतन का परिचय दिया। इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का भगवान महावीर के अहिंसा सिद्धान्त पर व्याख्यान हुआ।

इस पञ्च दिवसीय महा मंगलीय कार्यक्रम में प्रतिदिन नवलब्धि मण्डल विधान का भव्य आयोजन श्रीमती इन्दिराबेन जयन्तीलाल दोशी परिवार, मुम्बई द्वारा किया गया। विधि-विधान का सम्पूर्ण कार्य बाल ब्रह्मचारी पण्डित अभिनन्दनकुमार शास्त्री एवं पण्डित संजय जैन शास्त्री मंगलायतन द्वारा मंगलार्थी छात्रों के सहयोग से सम्पन्न कराया गया।

ह्र अशोक लुहाडिया

टोडरमल महाविद्यालय की वार्षिक प्रतियोगिताएँ सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के अन्तर्गत प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों द्वारा 25 दिसम्बर 06 से 14 जनवरी 07 तक विभिन्न आध्यात्मिक एवं खेल-कूद प्रतियोगितायें कराई गयी।

जिसमें **अन्ताक्षरी प्रतियोगिता** में **उपाध्याय वर्ग** से दीपेश जैन अमरमऊ व अभिषेक जोगी गजपंथा ने प्रथम, एकत्व पुजारी खनियांधाना व वीरेन्द्र जैन बकस्वाहा तथा रजित जैन व दीपक जैन भिण्ड ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। **शास्त्री वर्ग** से निखिल जैन कोतमा व अभय जैन खडैरी ने प्रथम तथा अंकित जैन लूणदा व शशांक जैन सागर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

धर्म श्रेष्ठ या धन विषय पर आयोजित **उपाध्याय वर्ग की वाद-विवाद प्रतियोगिता** में **पक्ष** से प्रकाश उखलकर गोवर्धन ने प्रथम व राहुल जैन नौगाँव ने द्वितीय तथा **विपक्ष** से अभिषेक जोगी गजपंथा ने प्रथम व जयेश जैन उदयपुर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

मोक्षमार्ग निश्चय से है या नहीं विषय पर आयोजित **शास्त्री वर्ग** की **वाद-विवाद प्रतियोगिता** में **पक्ष** से प्रसन्न शेटे कोल्हापुर ने प्रथम व प्रशांत उखलकर गोवर्धन ने द्वितीय तथा **विपक्ष** से कु. परिणति पाटील जयपुर ने प्रथम व गजेन्द्र जैन भिण्डर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

काव्यपाठ प्रति. में प्रथम सचिन जैन गढ़ी व द्वितीय राहुल जैन अलवर रहे। **भजन प्रति.** में कु. परिणति जैन जयपुर व विवेक जैन दलपतपुर प्रथम तथा सचिन जैन गढ़ी द्वितीय स्थान पर रहे। **श्लोक पाठ प्रति.** में **उपाध्याय वर्ग** से विवेक जैन दलपतपुर प्रथम तथा जी.श्रीकान्त आरणी व अभिषेक जोगी गजपंथा द्वितीय स्थान पर रहे। **शास्त्री वर्ग** से प्रसन्न शेटे कोल्हापुर व कु.परिणति पाटील जयपुर प्रथम तथा प्रशान्त उखलकर गोवर्धन द्वितीय स्थान पर रहे।

तात्कालिक भाषण प्रति. में **उपाध्याय वर्ग** से जयेश जैन उदयपुर प्रथम व अभिषेक जोगी गजपंथा द्वितीय स्थान पर रहे। **शास्त्री वर्ग** से गजेन्द्र जैन भिण्डर प्रथम एवं प्रशान्त उखलकर गोवर्धन द्वितीय स्थान पर रहे। **अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान वी. संतोष चेन्नई व द्वितीय स्थान कु.परिणति पाटील जयपुर ने प्राप्त किया।

चित्रकला प्रतियोगिता में प्रकाश उखलकर गोवर्धन ने प्रथम व अतिश जोगी औरंगाबाद ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। **शास्त्र सज्जा प्रतियोगिता** में **शास्त्री वर्ग** से सतीश बोरालकर डोणगाँव ने प्रथम, राहुल जैन अलवर व किशोर धोंगड़े रहाटगाँव ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। **उपाध्याय वर्ग** से आशीष जैन मड़ावरा प्रथम व संयम शेटे कोल्हापुर द्वितीय स्थान पर रहे।

हम और हमारा विश्व विषयक **निबन्ध प्रतियोगिता** में मोहित जैन नौगाँव ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। उक्त दोनों प्रतियोगिताओं का संयोजन सतीश बोरालकर डोणगाँव ने किया।

इन प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त क्रिकेट, कबड्डी, खो-खो, बॉलीबॉल, बैडमिंटन, कैरम, शतरंज, दौड आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन विद्यार्थियों के लिए किया गया।

सभी प्रतियोगिताओं के संचालक शास्त्री तृतीय वर्ष के विभिन्न छात्र एवं मुख्य संयोजक रोहन रोटे बाहुबली (कुंभोज) व अंकुर जैन रायसेन रहे। ●

कुन्दकुन्दधाम में गूँजी आचार्य कुन्दकुन्द की वाणी

पोन्नूरहिल (तमिलनाडू) : यहाँ आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति केन्द्र में दिनांक 23 से 25 दिसम्बर 2006 तक त्रिदिवसीय आध्यात्मिक शिविर का आयोजन किया गया; जिसमें श्री अरहंतगिरि मठ के भट्टारक श्री धवलकीर्तिस्वामीजी की प्रेरणा से नेमिनाथ उच्च माध्यमिक विद्यालय के बालकों एवं विभिन्न स्थानों से पधारे मुमुक्षुओं ने धर्मलाभ लिया।

शिविर में श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित जम्बूकुमारनजी शास्त्री, पण्डित उमापतिजी शास्त्री, पण्डित इलंगोवनजी शास्त्री, पण्डित जयराजनजी शास्त्री,पण्डित नाभिराजनजी शास्त्री एवं पण्डित पदमकुमारजी शास्त्री द्वारा तमिल भाषा में बालबोध पाठमाला व वीतराग-विज्ञान पाठमाला के माध्यम से तत्त्वज्ञान की धारा प्रवाहित की गई।

उद्घाटन के दिन श्रीमती शुद्धात्मप्रभा टडैया रचित जैन के.जी. के चारों भागों के तमिल अनुवाद का विमोचन हुआ। जिसका तमिल अनुवाद पं. जम्बूकुमारनजी शास्त्री ने किया।

अन्तिम दिन तमिल में हुये रत्नत्रय विधान के आयोजनकर्त्ता श्री बांकेबिहारी मिश्रा थे। संस्था के न्यासी श्री वी.सी. श्रीपालन एवं सी.एस.पी.जैन के मार्गदर्शन में श्री राजीव जैन, श्री कृष्णकुमार जैन एवं सुश्री सुमति जैन ने शिविर का संचालन किया। **ह्न उमापति जैन**

सिद्धायतन द्रोणगिरि में मानस्तंभ शिलान्यास

द्रोणगिरि-छतरपुर (म.प्र.) : यहाँ श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा सिद्धायतन परिसर में 5 से 9 फरवरी, 07 तक श्री मानस्तंभ एवं समवशरण जिनालय का शिलान्यास तथा आत्म-निकेतन व गुरुदत्त छात्रावास का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पंचपरमेष्ठी विधान एवं शिक्षण-शिविर का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित उत्तमचन्दजी सिवनी, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित विरागकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

गुरुदत्त छात्रावास का लोकार्पण श्री नरेशजी लुहाड़िया दिल्ली तथा **आत्म-निकेतन का लोकार्पण** एवं **समवसरण जिनालय का शिलान्यास** डॉ.वासंतीबेन मुम्बई द्वारा किया गया। **मानस्तंभ का शिलान्यास** श्री मुकेशजी जैन देवलाली, श्री सुखदयालजी डेवडिया केसली, जैन बहादुर जैन कानपुर, श्री महेन्द्रकुमार सुनीलकुमार सराफ सागर एवं श्री प्रसन्नकुमार जैन जबलपुर के करकमलों से हुआ। **बाहुबली जिनालय की वेदी का शिलान्यास** श्री अनंतभाई शेठ मुम्बई की ओर से पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने किया।

इस अवसर पर सिद्धायतन परिसर में 21से 27 जनवरी, 08 तक होने वाले पंचकल्याणक महोत्सव की तैयारियों हेतु विभिन्न समितियों के गठन की रूपरेखा प्रस्तुत की गई एवं प्रचार-प्रसार हेतु सिद्धायतन रथ के 1 अप्रैल को नई दिल्ली से प्रवर्तन करने की घोषणा की गई। **ह्न पीयूष शास्त्री**

विदाई समारोह सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 12 फरवरी, 07 को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों को भावभीनी विदाई दी गई।

सभा की अध्यक्षता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित श्रीयांसजी सिंघई, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री, श्री दिलीपजी शाह, श्री राजधरजी मिश्र आदि महानुभावों ने छात्रों के हितार्थ मार्मिक उद्‌बोधन दिये।

समारोह में शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों में जितेन्द्र जैन, अमित जैन, अंकुर जैन, रमेश शेरट्ठे, धीरज जैन, प्रशान्त उखलकर, रोहन रोटे, अभय जैन एलमचन्द, नयन जैन, निखिल जैन, अनुप्रेक्षा जैन, किशोर जैन एवं निपुण जैन ने महाविद्यालय में प्रवेश के पूर्व अपनी जीवन शैली को बताते हुए महाविद्यालय में व्यतीत किये पाँच वर्ष के अनुभवों, अनुजों को मार्गदर्शन एवं अपनी आगामी योजनाओं के संबंध में विचार व्यक्त करते हुए महाविद्यालय परिवार एवं गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

अन्त में शास्त्री अन्तिम वर्ष के विद्यर्थियों को तिलक लगाकर, मार्ल्यापण, श्रीफल एवं स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया गया।

अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने विद्यार्थियों को समाज और संस्था से जुड़े रहकर निरन्तर स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। क्योंकि इसी के माध्यम से उत्कृष्ट तत्त्वप्रचार संभव है।

इस कार्यक्रम का संचालन शास्त्री द्वितीय वर्ष से सचिन जैन, प्रसन्न सेठे, प्रतीक जैन, संतोष जैन एवं चैतन्य जैन ने किया।

ज्ञातव्य है कि इसकी पूर्व संध्या में दिनांक 11 फरवरी को शास्त्री तृतीयवर्ष द्वारा अयोजित सांस्कृतिक साहित्यिक कार्यक्रमों के पुरस्कार वितरित किये गये।

वैराग्य समाचार

अलवर निवासी **श्री योगेशचन्द जैन** पुत्र श्री बाबूलालजी जैन का दिनांक 10 जनवरी 06 को अल्पायु में आकस्मिक निधन हो गया। आपका श्री रत्नत्रय दि. जैन मंदिर के निर्माण एवं आगामी नेमिनाथ पंचकल्याणक के प्रचार-प्रसार में विशेष योगदान रहा। आप अ.भा. जैन युवा फैडरेशन, श्री कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट एवं दि. जैन मुमुक्षु मण्डल के सक्रिय सदस्य थे।

आपकी स्मृति में फैडरेशन की ओर से जैनपथप्रदर्शक समिति को 251/- की राशि प्राप्त हुई है।

उपराष्ट्रपतिजी द्वारा प्रवचनसार भाषा कवित्त का विमोचन

विमोचन करते हुये महामहिम उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंहजी शेखावत साथ में हैं श्री मिलापचन्द डंडिया, श्री हरीश ठोलिया एवं डॉ. श्रीयांस सिंघई

जयपुर : यहाँ 24 जनवरी को भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम भैरोसिंहजी शेखावत द्वारा उनके ही निवास स्थान पर आयोजित भव्य समारोह में 'प्रवचनसार भाषा कवित्त' का विमोचन किया गया।

250 वर्ष पूर्व बुन्देलखण्ड में हुये कविवर देवीदास द्वारा विरचित प्रवचनसार की पद्य टीका 'प्रवचनसार भाषा कवित्त' का श्री टोडरमल दि. जैन सि. महा. प्रथम बैच के स्नातक **डॉ. श्रीयांसकुमारजी सिंघई** ने हिन्दी भाषा में अनुवाद एवं सम्पादन किया। कृति का प्रकाशन **श्री हरीशचन्दजी ठोलिया** परिवार द्वारा उनकी धर्मपत्नी की स्मृति में किया गया।

इस अवसर पर महामहिम उपराष्ट्रपति भैरोसिंहजी शेखावत ने कहा कि पाण्डुलिपियाँ भारतीय संस्कृति की धरोहर है, इनमें ज्ञान-विज्ञान की विरासत छिपी हुई है।

छहढ़ाला शिक्षण-शिविर एवं विधान सम्पन्न

अशोकनगर (म.प्र.) : श्री अखिल भा. दि. जैन विद्वत्परिषद् के तत्त्वावधान में 19 से 25 जनवरी 07 तक छहढ़ाला शिक्षण-शिविर एवं 20 तीर्थंकर विधान का आयोजन श्री कुन्दकुन्द दि. जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के दशम वार्षिकोत्सव समारोह के अन्तर्गत अ. भा. जैन युवा फैडरेशन अशोकनगर द्वारा सम्पन्न हुआ। शिविर का उद्घाटन श्री सुरेशचन्द पद्मकुमार जैन (विजय किराणा स्टोर) एवं ध्वजारोहण श्री मदनलालजी पालीवाल के करकमलों से हुआ।

प्रतिदिन दोनों समय के तीन प्रवचनों में क्रमश: पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. जयकुमारजी मुजफ्फरनगर, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई एवं आगन्तुक विद्वानों से समाज लाभान्वित हुआ।

पण्डित कोमलचन्दजी द्रोणगिरि, श्रीमती कमलाजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित सतीशजी पिपरई एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री पिड़ावा द्वारा अपराह्न छहढ़ाला की कक्षाएँ ली गईं।

शिविर के अन्तिम तीन दिन **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के दोनों समय के प्रवचन विशेष आर्कषण का केन्द्र रहे। स्थानाभाव होने से आपके प्रवचनों के लिए विशेष पाण्डाल बनाया गया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित विवेकजी शास्त्री पिड़ावा द्वारा कराये गए।

यह शिविर पूर्व में चन्देरी (म.प्र.) में आयोजित किया जाना निश्चित था; किन्तु अपरिहार्य कारणों से स्थान परिवर्तन कर अशोकनगर में लगाया गया। **ह्न अखिल बंसल**